यदि राष्ट्रसंघ की असफलताओं पर चर्चा करते हैं तो ज्ञात है कि राष्ट्रसंघ वर्साय सन्धि पर आधारित था तथा इसका निर्माण भी वर्साय सन्धि के साथ में हुआ था। यह सन्धि न्याय संगत नहीं था इसका कोई नैतिक आधार नही था पराजित राष्ट्रों के लिए यह सन्धि अपमान जनक थी इन सन्धि द्वारा जर्मनी को आर्थिक एवं सैनिक शक्ति तोड़ दी गई थी सोचा जा रहा था कि जर्मनी 60 साल तक उठ नहीं पायेगा सन्धि की शर्तों का विरोध प्रारम्भ से हो रहा था पराजित राष्ट्र विजय राष्ट्रों का संघ मानता था यहि कारण है कि जब हिटलर 1933 ई० में सत्ता में आया तो एक-एक कर सन्धि की कठोर शर्तों को तोड़ डाला एक इतिहास कार ने वर्साय सन्धि को बदनाम माँ और राष्ट्रसंघ को उसकी अप्रतिष्ठित बेटी कहा है। इसका परिणाम यह था कि राष्ट्र संघ आरम्भ से ही कमजोर था।

विश्व के प्रमुख देशों को राष्ट्रसंघ में नहीं होने के कारण राष्ट्रसंघ कमजोर हो गया जो असफलता के कारण माना जाता है चूंकि अमेरिका के राष्ट्रपति इसके जन्मदाता थे दुर्भाग्य वश 1918 ई० अमेरिका में चुनाव हुआ था उस में

JUNE 2005 M 6 13 20 27 T 7 14 21 28 W 1 8 15 22 29 T 2 9 16 23 30 F 3 10 17 24 S 4 11 18 25 S 5 12 19 26

REDMI NOTE 9 PRO
AI QUAD CAMERA

रिपब्लिकन पार्टी को काँग्रेस में बहुमत मिला
था जो राष्ट्रपति विल्सन और का
विरोधी कर रहा था, विल्सन चाहता था
कि अमेरिकी सिनेट राष्ट्रसंघ को स्वीकार
कर ले लेकिन अमेरिकी सिनेट ने 1920 ई. में वर्साई
सन्धि और राष्ट्रसंघ दोनों को अस्वीकार कर
दिया। जिस कारण अमेरिका राष्ट्र संघ से बाहर
हो गया हालांकि आशा थी की बाहर से भी
अमेरिका राष्ट्रसंघ को सेना और युद्ध सामग्री
का मदद करेगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ इसका
नतीजा यह हुआ कि ब्रिटेन और फ्रांस ने भी
मनमानी कर साम्राज्यवादी स्वार्थ का माध्यम
~~साधन बन~~ बना लिया यह कारण है जब चीन
और जापान में विवाद उठा तो राष्ट्र संघ ओर
महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया इसलिए
लेनिन ने राष्ट्रसंघ को डाकुओं का अड्डा
तथा संगठित पाखण्ड कहता था।

ब्रिटेन और
फ्रांस की तुष्टिकरण की नीति राष्ट्रसंघ
की असफलता का कारण माना जाता
है चूंकि रूस और अमेरिका राष्ट्रसंघ
से अलग था राष्ट्रसंघ को सफल
बनाने की सारी जिम्मेवारी स्वयं और
ब्रिटेन पर थी लेकिन ये दोनों देश एकमत
[illegible] प्रथम विश्व युद्ध के बाद
[illegible] युद्ध से त्रस्त थे जिस कारण
ब्रिटेन और फ्रांस युद्ध से

JULY 2005			
4	11	18	25
5	12	19	26
6	13	20	27
7	14	21	28
8	15	22	29
9	16	23	30
10	17	24	31

REDMI NOTE 9 PRO
AI QUAD CAMERA

ब्रिटेन अभी जर्मनों को खुश करने के लिए गुप्त रूप से अतिरिक्त रियायतें देने को तैयार किया था इनके साथ जापान के विरुद्ध कोई कारगर कार्रवाई नहीं की उनकी विदेश नीति स्वार्थ पर आधारित था केवल अपने देश और साम्राज्य की चिन्ता की यही हाल फ्रांस का था और मुसोलिनी को प्रसन्न करने के प्रयास इसका विश्व के भविष्य की चिन्ता न ब्रिटेन का था और न फ्रांस का यही कारण है कि हिटलर और मुसोलिनी महत्वाकांक्षी होते गये और पूरे यूरोप को अपना शिकार बनाया इस तरह से हम देखते है कि फ्रांस और ब्रिटेन की तुष्टिकरण नीति के कारण राष्ट्र संघ असफल रहा

राष्ट्र संघ के असमान सिद्धान्त भी असफलता का कारण माना जाता है। विश्व को शान्ति एवं सुरक्षा देने के लिए राष्ट्र संघ चार असमान सिद्धान्तों पर आधारित था वह यह था कि शस्त्रास्त्र के निर्माण को रोकना आक्रमण में सुरक्षा प्रदान करना, विवादों का निर्णय अथवा शान्तिपूर्ण साधनों से परिवर्तन इस

हम देखते है कि राष्ट्रसंघ के निर्माण में सुरक्षा पर काफी जोर दिया गया था लेकिन शान्ति निर्माण पर तथा शान्तिपूर्ण परिवर्तन पर कम जोर दिया गया जो राष्ट्रसंघ के समान सिद्धान्त नहीं थे और असमानता दिखाई पड़ता है इसलिए राष्ट्रसंघ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व्यवस्था को रखने में असफल रहा।

राष्ट्रसंघ में सार्वभौम शक्ति का अभाव भी असफलता का कारण बना चूंकि विश्व के अधिकांश बड़े-बड़े राष्ट्र इसका सदस्य नहीं थे सोवियत रूस, जर्मनी, अमेरिका, इटली और तुर्की को प्रारम्भ में राष्ट्रसंघ से अलग रखा गया था जिससे यह भावना प्रकट होती है कि राष्ट्रसंघ वर्साय सन्धि की व्यवस्थाओं को बनाये रखने के लिए विजेताओं का संघ था हालांकि विल्सन का लक्ष्य राष्ट्रसंघ के महत्व को बढ़ाना था लेकिन परिणाम उल्टा निकला और 1919-20 के संधियों से असंतुष्ट राष्ट्र संघ से अलग हो गये और धीरे-धीरे यह कमजोर संस्था हो गई।

JULY 2005
M 4 11 18 25
T 5 12 19 26
W 6 13 20 27
T 7 14 21 28
F 1 8 15 22 29
S 2 9 16 23 30
S 3 10 17 24 31

राष्ट्रसंघ के संविधान में दोष भी असफलता का कारण माना जाता है

चूंकि अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को शान्ति पूर्ण
निपटाने के लिए
की व्यवस्था भी इसके कम ख़ामियाँ
रह गई थी पहला यह था कि कोई भी मत
निर्णय सर्वसम्मति से करना अनिवार्य था
दूसरी कमी थी कि राष्ट्र
विवादों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता था जिसे
कोई राष्ट्र अपना घरेलू विवाद/मामला
घोषित कर देता था एक सबसे बड़ी
त्रुटि संविधान की यह थी कि आक्रमण
की कोई निश्चित परिभाषा नहीं थी
हालांकि 1923 ई. में जेनेवा प्रोटोकाल के
पैक्ट ऑफ पेरिस के माध्यम से सुधार
का प्रयास किया गया था लेकिन
यह प्रयास असफल रहा राष्ट्रसंघ के
पास कोई अपना सेना नहीं था संकट
के समय सदस्य देशों के सैनिकों पर
निर्भर रहना पड़ता था देना या न देना
उनकी इच्छा पर निर्भर था

यूरोप में अधिनायक-
वाद का उदय भी राष्ट्रसंघ के असफलता
का महत्वपूर्ण कारण माना जाता है
अधिनायकवाद के चलते वार्ता की जगह
सेना का महत्व बढ़ गया जो. प्रथम वि

युद्ध के बाद इटली, जर्मनी, और स्पेन में
अधिनायकवादी शासन स्थापित हुए
इन सभी मुसोलिनी, हिटलर, जनरल फ्रैंको
से शान्ति की आशा नहीं की जा सकती थी
जापान में भी इसी तरह की भावना काम
कर रही थी इन सभी राष्ट्रों ने राष्ट्रसंघ
से अलग होकर खुलेआम छोटे-छोटे
राष्ट्रों पर कब्जा कर खत्म कर दिया मुसोलिनी
का विचार था जिसको शान्ति कहा जाता है
वास्तव में वह युद्ध विराम होता है यदि युद्ध
अनिवार्य है तो शान्ति नहीं सकती।

1929 - 31

के विश्वव्यापी आर्थिक संकट ने पूरे यूरोपीय
देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा दिया संकट
के सामने यह टिक न सके समस्या उत्पन्न हो
गई, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी
और जापान को काफी परेशानी भी हो रही
इन सबों ने दूर करने का प्रयास भी किया
किन्तु असफलता मिला ब्रिटेन और फ्रांस ने
जापान, इटली और जर्मनी का पक्ष
लेना शुरू किया क्योंकि पूंजीवाद
को विरोधी था कोमिन्टर्न उसको
पूंजीवादी नीति का विरोधी हो गये ऐसी
स्थिति में राष्ट्रसंघ और विश्व शान्ति
हो गया।

उग्रराष्ट्रीयता की भावना ने

राष्ट्रसंघ के असफलता का कारण माना जाता है। चूंकि प्रथम विश्व युद्ध बाद विश्वशान्ति हेतु राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई थी जो पश्चिमी राष्ट्रों के स्वार्थ की पूर्ति का साधन बन गया इसका परिणाम पर की पराजित तथा विजेता राष्ट्रों का संघ के बीच शत्रुता बढ़ गई और इसी उग्रराष्ट्रीयता को जन्म दिया और अवसर मिलने पर यूरोपीय राष्ट्रों ने अन्तर्राष्ट्रीयता का त्याग किया तथा राष्ट्रीयता के सिद्धान्त को ही महत्व दिया जिसने राष्ट्रसंघ कमजोर होगया और असफलता की ओर अग्रसर हुआ।

अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि जो राष्ट्रसंघ करना चाहता था उसके लिए संसार के लोग तैयार नहीं थे सभी देश अपने-अपने स्वार्थ पर अड़े थे कोई भी देश सारे संसार के हित के लिए अपने आप को धारे में के लिए तैयार नहीं थे ऐसी स्थिति में राष्ट्रसंघ को असफल होना स्वाभाविक था।

JUNE 2005
M 6 13 20 27
T 7 14 21
W 8 15 22
T 2 9 16 23 30
F 17 24
S 4 11 18 25
S 12 19 26

उत्तर वैदिक काल

TUESDAY 14

ऋग्वेद के बाद के काल को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। इस काल में ऋग्वेद के अतिरिक्त तीन वेदों तथा ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई जो वैदिक साहित्य का अंग माना जाता है इसी काल में आर्यों का विस्तार पूर्व की ओर सप्तसिन्धु प्रदेश से होते हुए बिहार तक फैल गया था इसी काल में भारत के उन आदिवासियों से जो संघर्ष समाप्त हो गया था तथा बहुमुखी उन्नति करने का अवसर प्राप्त हुआ था, जीवन स्थिति में सभ्यता संस्कृति का विकास हुआ इसलिए ऋग्वैदिक तथा उत्तर वैदिक काल में बहुत अन्तर माना जाता है। अतः इस काल की भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन विभिन्न पहलुओं से किया जा सकता है